२. शिवाजी महाराज से पूर्व का भारत

इस पाठ में हम शिवाजी महाराज से पूर्वकाल में भारत में जो विभिन्न राजसत्ताएँ थीं; उनका अध्ययन करेंगे। इस कालखंड में भारत में विभिन्न राजसत्ताएँ अस्तित्व में थीं।

आठवीं शताब्दी में बंगाल में 'पाल' विख्यात राजवंश था। मध्य भारत में गुर्जर-प्रतिहार सत्ताओं ने आंध्र, कलिंग, विदर्भ, पश्चिम काठियावाड़, कन्नौज और गुजरात तक सत्ता विस्तार किया।

उत्तर भारत के राजपूत वंशों में गहड़वाल वंश, परमार वंश महत्त्वपूर्ण थे। राजपूतों में चौहान वंश का पृथ्वीराज चौहान पराक्रमी शासक था। तराई नामक स्थान पर हुए प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी को पराजित किया। लेकिन तराई में हुए दूसरे युद्ध में मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया।

तमिलनाडु के चोल वंश के राजराज प्रथम और राजेंद्र प्रथम असाधारण महत्त्व रखते हैं। चोल शासकों ने नौसेना के बल पर मालदीव द्वीप और श्रीलंका को जीत लिया। कर्नाटक के होयसळ वंश के विष्णुवर्धन राजा ने संपूर्ण कर्नाटक को जीत लिया।

महाराष्ट्र के राष्ट्रकूट वंश के गोविंद तृतीय के कार्यकाल में राष्ट्रकूट की सत्ता कन्नौज से लेकर रामेश्वर तक फैली हुई थी। कालांतर में कृष्ण तृतीय ने इलाहाबाद तक का प्रदेश जीत लिया।

शिलाहारों के तीन वंश पश्चिम महाराष्ट्र में उदित हुए। पहला वंश कोकण में ठाणे और रायगढ़, दूसरा वंश दक्षिण कोकण पर तथा तीसरा वंश कोल्हापुर, सातारा, सांगली और बेलगाँव जिलों के कुछ हिस्सों पर राज्य कर रहे थे।

शिवाजी महाराज से पूर्व काल के अंत में महाराष्ट्र के यादवों की राजसत्ता वैभवशाली राजसत्ता मानी जाती है। यादव वंश का शासक भिल्लम पंचम की राजधानी औरंगाबाद के समीप देवगिरी में थी। उसने कृष्णा नदी के पार अपनी सत्ता का विस्तार किया।

यादवों का शासनकाल मराठी भाषा और साहित्य का स्वर्णयुग माना जाता है। इसी कालखंड में महाराष्ट्र में महानुभाव और वारकरी संप्रदायों का उदय हुआ।

पश्चिमोत्तर दिशा में आक्रमण

यद्यपि महाराष्ट्र में राष्ट्रकूट, यादव जैसे स्थानीय घरानों की सत्ता थी फिर भी उत्तर में इन स्थितियों का लाभ पश्चिमोत्तर दिशा से आए आक्रमणकारियों ने उठाया। वहाँ की स्थानीय सत्ताओं को जीतकर अपना आधिपत्य स्थापित किया।

इस बीच की कालावधि में मध्य-पूर्व में अरब सत्ता का उदय हुआ। साम्राज्य का विस्तार करने के लिए अरब सत्ताधीश भारत की ओर मुड़े। आठवीं शताब्दी में अरब सेनानी मुहम्मद-बिन-कासम ने सिंध प्रांत पर आक्रमण किया। सिंध के दाहिर राजा के प्रतिकार को निष्फल बनाते हुए उसने सिंध प्रांत को जीता। इस आक्रमण के परिणामस्वरूप अरबों का भारत के साथ पहली बार राजनीतिक संपर्क हुआ। कालांतर में मध्य एशिया के तुर्की, अफगानी और मुगल भारत में आए और उन्होंने भारत में अपनी सत्ता स्थापित की।

ई.स. की ग्यारहवीं शताब्दी में भारत पर तुर्कियों के आक्रमण प्रारंभ हुए। वे अपनी सत्ता का विस्तार करते हुए भारत की पश्चिमोत्तर सीमा तक आ पहुँचे। गजनी का सुल्तान महमूद ने भारत पर अनेक आक्रमण किए। इन आक्रमणों में उसने मथुरा, वृंदावन, कन्नौज, सोमनाथ के संपन्न मंदिरों को लूटा और वहाँ की विपुल संपत्ति अपने साथ ले गया। बख्त्यार खलजी ने विश्वप्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय का समृद्ध ग्रंथालय जला डाला।

उत्तर की सुल्तानशाही

ई.स.११७५ और ११७८ में अफगानिस्तान के गोर के सुल्तान मुहम्मद गोरी ने भारत पर आक्रमण किए। भारत में जीते हुए प्रदेश का प्रशासन चलाने के लिए उसने कुतुबुद्दीन ऐबक की नियुक्ति की।

ई.स.१२०६ में मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपने आधिपत्य में भारतीय प्रदेश का शासन स्वतंत्रतापूर्वक चलाना प्रारंभ किया। ऐबक मूलतः एक गुलाम था फिर भी वह दिल्ली का सुल्तान बना। ई.स.१२१० में उसकी मृत्यु हुई।

क्या तुम जानते हो ?

कुतुबुद्दीन ऐबक के पश्चात अल्तमश, रजिया, बलबन, अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद तुगलक, फिरोज तुगलक, इब्राहीम लोदी आदि सुल्तानों ने भारत पर शासन किया।

इब्राहीम लोदी अंतिम सुल्तान था। उसके स्वभाव में अनेक दोष थे। फलतः उसके अनगिनत शत्रु बने। पंजाब के सूबेदार दौलतखान लोदी ने काबुल के मुगल सत्ताधीश बाबर को इब्राहीम लोदी के विरुद्ध युद्ध के लिए आमंत्रित किया। इस युद्ध में बाबर ने इब्राहीम लोदी को पराजित किया और इसी के साथ सुल्तानशाही का अंत हो गया।

विजयनगर राज्य

दिल्ली का सुल्तान मुहम्मद तुगलक के कार्यकाल में दिल्ली की केंद्रीय सत्ता के विरुद्ध दक्षिण में विद्रोह हुए। इसी से विजयनगर और बहमनी इन दो शक्तिशाली राज्यों का उदय हुआ।

दक्षिण भारत के दो भाई-हरिहर और बुक्का दिल्ली की सुल्तानशाही की सेवा में सरदार थे। मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में दक्षिण में राजनीतिक अस्थिरता निर्माण हो गई। हरिहर और बुक्का ने इस अस्थिरता का लाभ उठाते हुए ई.स.१३३६ में दक्षिण में विजयनगर राज्य की स्थापना की। वर्तमान कर्नाटक का 'हंपी' नगर इस राज्य की राजधानी था। हरिहर विजयनगर का प्रथम शासक बना।

हरिहर के पश्चात उसका भाई बुक्का सत्तासीन हुआ। रामेश्वर तक के प्रदेश को बुक्का अपने आधिपत्य में ले आया।

कृष्णदेवराय : ई. स. १५०९ में कृष्णदेवराय विजयनगर का शासक बना। उसने विजयवाड़ा और राजमहेंद्री प्रदेशों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। बहमनी सुल्तान महमूद शाह के नेतृत्व में एकत्रित हुए सुल्तानों के सैन्य संघ की उसने पराजय की। कृष्णदेवराय के कार्यकाल में विजयनगर राज्य पूर्व में कटक से लेकर पश्चिम में गोआ तक और उत्तर में रायचूर दोआब से लेकर दक्षिण में हिंद महासागर तक फैला हुआ था। ई. स. १५३० में कृष्णदेवराय की मृत्यु हुई।

कृष्णदेवराय

कृष्णदेवराय विद्वान था। उसने तेलुगु भाषा में राजनीति से संबंधित 'आमुक्तमाल्यदा' नामक ग्रंथ लिखा। उसके शासनकाल में विजयनगर में हजार राम मंदिर और विठ्ठल मंदिर का निर्माण कार्य हुआ।

कृष्णदेवराय के पश्चात विजयनगर राज्य की शक्ति घटती गई। वर्तमान कर्नाटक राज्य के तालिकोट में एक ओर आदिलशाही, निजामशाही, कुतुबशाही, बरीदशाही और दूसरी ओर विजयनगर का शासक रामराय के बीच ई.स.१५६५ में युद्ध हुआ। इस युद्ध में विजयनगर की पराजय हुई। इसके बाद विजयनगर राज्य समाप्त हुआ।

बहमनी राज्य

मुहम्मद तुगलक के प्रभाव को उखाड़ फेंकने के लिए दक्षिण के सरदारों ने विद्रोह किया। इन सरदारों का प्रमुख हसन गंगू था। उसने दिल्ली के सुल्तान की सेना को पराजित किया और ई.स.१३४७ में नए राज्य का उदय हुआ। इसे बहमनी राज्य कहते हैं। हसन गंगू बहमनी राज्य का प्रथम सुल्तान बना। उसने कर्नाटक राज्य के 'गुलबर्गा' में अपनी राजधानी की स्थापना की।

महमूद गवाँ : महमूद गवाँ बहमनी राज्य का प्रमुख वजीर और उत्तम प्रशासक था । उसने बहमनी राज्य को आर्थिक रूप से सामर्थ्यशाली बनाया । सैनिकों को जागीरें देने के स्थान पर नकद वेतन देना प्रारंभ किया । सैनिकों में अनुशासन निर्माण किया । भू-राजस्व प्रणाली में सुधार किया। बीदर में अरबी और फारसी विद्याओं के अध्ययन हेतु मदरसा स्थापित किया ।

महमूद गवाँ के पश्चात बहमनी सरदारों में गुटबंदी बढ़ने लगी । विजयनगर और बहमनी राज्यों के बीच चलने वाले संघर्ष का बहमनी राज्य पर प्रतिकूल परिणाम हुआ । विभिन्न प्रांतों के अधिकारी अधिक स्वतंत्रता के साथ रहने लगे । बहमनी राज्य का विघटन हुआ और बहमनी राज्य के वऱ्हाड़ (बरार) की इमादशाही, बीदर की बरीदशाही, बीजापुर की आदिलशाही, अहमदनगर की निजामशाही और गोलकुंडा की कुतुबशाही ये पाँच खंड बने ।

मुगल सत्ता

ई.स. १५२६ में दिल्ली की सुल्तानशाही समाप्त हुई और वहाँ मुगल सत्ता की स्थापना हुई ।

बाबर : बाबर मुगल सत्ता का संस्थापक था । वह मध्य एशिया में वर्तमान उजबेकिस्तान के फरगाना राज्य का शासक था । भारत की संपन्नता और संपत्ति का वर्णन उसने सुन रखा था । इसलिए उसने भारत पर आक्रमण करने की योजना बनाई ।

उस समय दिल्ली में इब्राहीम लोदी सुल्तान था और वह राज्य प्रशासन चला रहा था । सुल्तानशाही के अंतर्गत पंजाब प्रदेश में दौलतखान लोदी प्रमुख अधिकारी था । इब्राहीम लोदी तथा दौलतखान लोदी के संबंधों में संघर्ष प्रारंभ हुआ । दौलतखान ने बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया। इस अवसर का लाभ उठाते हुए बाबर ने भारत पर आक्रमण किया । बाबर के आक्रमण का प्रतिकार करने के लिए इब्राहीम लोदी अपनी सेना को लेकर चल पड़ा । २१ अप्रैल १५२६ को पानीपत में उसका बाबर के साथ युद्ध हुआ । इस युद्ध में बाबर ने भारत में पहली बार तोपखाने का प्रभावी उपयोग किया । उसने इब्राहीम लोदी की सेना को पराजित किया । यह युद्ध 'पानीपत का प्रथम युद्ध' था ।

इस युद्ध के बाद मेवाड़ के राणा सांगा ने राजपूत राजाओं को एकत्रित किया । बाबर और राणा सांगा के बीच खानुआ नामक स्थान पर युद्ध हुआ । इस युद्ध में बाबर के तोपखाना और आरक्षित सेना ने प्रभावशाली कार्य किया । राणा सांगा की सेना हार गई । ई.स.१५३० में बाबर की मृत्यु हुई ।

क्या तुम जानते हो ?

बाबर के बाद हुमायूँ (ई.स. १५३० से ई.स.१५३९ और ई.स.१५५५ से ई.स.१५५६) गद्दी पर बैठा । हुमायूँ के कार्यकाल में शेरशाह ने उसको पराजित किया और दिल्ली के सिंहासन पर सूर वंश की स्थापना की । हुमायूँ के पश्चात अकबर (ई.स.१५५६ से १६०५) सत्तासीन हुआ । ई.स.१५५६ में अकबर और हेमू के बीच पानीपत में युद्ध हुआ । यह पानीपत का द्वितीय युद्ध था । अकबर संपूर्ण भारत को अपने अधीन लाने की महत्त्वाकांक्षा रखता था । अकबर के बाद जहाँगीर (ई.स.१६०५ से ई.स.१६२८) शासक बना । उसके कार्यकाल में उसकी पत्नी नूरजहाँ ने प्रभावी ढंग से शासन चलाया । जहाँगीर के पश्चात शाहजहाँ (ई.स.१६२८ से १६५८) गद्दी पर बैठा । शाहजहाँ के बाद औरंगजेब (ई.स.१६५८ से ई.स.१७०७) दीर्घ अवधि तक शासक बना । उसकी मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य चरमरा गया।

अकबर मुगल वंश में सबसे अधिक पराक्रमी और कार्यक्षम शासक था । अकबर ने संपूर्ण भारत को अपने छत्र के नीचे लाने का प्रयास किया । इस प्रयास में उसको विरोध हुआ । महाराणा प्रताप,

चांदबीबी, रानी दुर्गावती द्‌वारा अकबर के विरुद्‌ध किया गया संघर्ष उल्लेखनीय है ।

महाराणा प्रताप : उदयसिंह की मृत्यु के पश्चात महाराणा प्रताप मेवाड़ के सिंहासन पर बैठे । उन्होंने मेवाड़ के अस्तित्व को जीवित रखने के लिए संघर्ष जारी रखा । महाराणा प्रताप ने मेवाड़ की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखने के लिए अकबर के साथ अंत तक संघर्ष किया । महाराणा प्रताप अपनी वीरता, धैर्य, आत्मसम्मान, त्याग आदि गुणों के कारण इतिहास में अमर बने ।

राणा प्रताप

चांदबीबी : ई.स.१५९५ में मुगलों ने निजामशाही की राजधानी अहमदनगर पर आक्रमण किया । मुगल सेना ने अहमदनगर के किले को घेर लिया । अहमदनगर के हुसैन निजामशाह की पराक्रमी बेटी चांदबीबी ने वीरतापूर्वक युद्‌ध किया । उस समय निजामशाही के सरदारों में फूट पैदा हुई । इस फूट का परिणाम चांदबीबी की हत्या में हुआ। कालांतर में मुगलों ने अहमदनगर का किला जीत लिया परंतु निजामशाही का संपूर्ण राज्य मुगलों के हाथ में नहीं आया ।

चांदबीबी

रानी दुर्गावती : विदर्भ का पूर्वी क्षेत्र, उसके उत्तर का मध्य प्रदेश का क्षेत्र, वर्तमान छत्तीसगढ़ का पश्चिमी क्षेत्र, आंध्र प्रदेश का उत्तरी हिस्सा और ओडिशा का पश्चिमी क्षेत्र मोटे तौर पर गोंडवाना का विस्तार है । चंदेल राजपूत के वंश में जन्मी दुर्गावती विवाह के पश्चात गोंडवाना की रानी बनी । उसने उत्तम पद्‌धति से शासन चलाया । मध्यकालीन इतिहास में रानी दुर्गावती द्‌वारा मुगलों के विरुद्‌ध किया गया युद्‌ध अपना अलग महत्त्व रखता है । दुर्गावती ने अपने पति की मृत्यु के बाद अकबर के साथ युद्‌ध करते हुए वीरगति पाई परंतु घुटने नहीं टेके । अकबर एक सुविज्ञ तथा सजग शासक था । उसकी धार्मिक नीति उदार तथा सहिष्णु थी । वह सभी धर्मों की जनता के साथ समान व्यवहार करता था । सभी धर्मों के उदात्त तत्त्वों का समन्वय करके अकबर ने 'दीन–ए–इलाही' धर्म की स्थापना की लेकिन उसने दीन–ए–इलाही स्वीकार करने के लिए किसी को भी अनिवार्य नहीं किया ।

रानी दुर्गावती

औरंगजेब : बादशाह शाहजहॉ ने पुत्रों में से औरंगजेब सत्ता की स्पर्धा में सफल होकर पिता को बंदी बनाकर ई.स.१६५८ में बादशाह बन गया । शाहजहॉ का बडा बेटा दारा शुकोह धार्मिक सहिष्णुता के बारे में प्रसिद्‌ध था । उसने पचास से भी अधिक संस्कृत उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद किया । औरंगजेब बादशाह बना उस समय मुगल साम्राज्य उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में अहमदनगर तक और पश्चिम में काबुल से पूर्व में बंगाल तक फैला हुआ था । औरंगजेब ने अपने शासनकाल में पूर्व में असम, दक्षिण में बीजापुर की आदिलशाही तथा गोलकुंडा की कुतुबशाही को नष्ट करके उनके प्रदेश अपने साम्राज्य में मिला लिए ।

औरंगजेब

आहोमों के साथ संघर्ष : ई.स. की तेरहवीं शताब्दी में शान समाज के लोग ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी में स्थायी रूप में बस गए । वहाँ इन लोगों ने अपना राज्य स्थापित किया । स्थानीय लोग इन लोगों को आहोम कहते थे ।

औरंगजेब के कार्यकाल में आहोम और मुगलों के बीच दीर्घकाल तक संघर्ष चला । मुगलों ने आहोमों के प्रदेश पर आक्रमण किया । सभी आहोम गदाधर सिंह के नेतृत्व में संगठित हुए । लाच्छित बड़फूकन नामक सेनानी ने मुगलों के विरुद्ध प्रखर संघर्ष किया । मुगलों के विरुद्ध युद्ध में आहोमों ने गुरिल्ला युद्ध प्रणाली (छापामार युद्ध) का अवलंब किया । असम में अपनी सत्ता को दृढ़ करना मुगलों के लिए असंभव हुआ ।

सिखों के साथ संघर्ष : सिखों के नौवें धर्मगुरु गुरु तेगबहादुर थे । उन्होंने औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता की नीति के विरुद्ध अपना विरोध जताया । औरंगजेब ने उन्हें बंदी बनाया और १६७५ ई.स. में उनका सिर कटवा दिया । उनके पश्चात गुरु गोविंद सिंह सिखों के गुरु बने ।

गुरु गोविंद सिंह

गुरु गोविंद सिंह ने अपने अनुयायियों को संगठित कर उनके भीतर की वीरता को प्रेरित किया । उन्होंने योद्धा सिख युवाओं का एक दल स्थापित किया । इस दल को 'खालसा दल' कहते हैं । आनंदपुर उनका प्रमुख केंद्र था । औरंगजेब ने सिखों के विरुद्ध सेना भेजी । उसकी सेना ने आनंदपुर पर आक्रमण किया । इस समय सिखों ने प्रखर संघर्ष किया परंतु उन्हें सफलता नहीं मिली । इसके बाद गुरु गोविंद सिंह दक्षिण में आए और नांदेड में निवास करने लगे । ई.स.१७०८ में उनपर आक्रमण हुआ । इसी हमले के फलस्वरूप कालांतर में उनकी मृत्यु हुई ।

राजपूतों के साथ संघर्ष : अकबर ने अपनी सौहार्दपूर्ण नीति से राजपूतों का सहयोग प्राप्त किया था परंतु राजपूतों का वैसा सहयोग औरंगजेब प्राप्त नहीं कर सका । मारवाड़ के राणा जसवंत सिंह की मृत्यु के पश्चात उसके राज्य को औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य में मिला लिया । दुर्गादास राठौर ने जसवंत सिंह के अल्पायु बेटे अजित सिंह को मारवाड़ की गद्दी पर बिठाया । दुर्गादास राठौर ने मुगलों के विरुद्ध जबरदस्त संघर्ष किया । दुर्गादास के इस विरोध को समाप्त करने के लिए औरंगजेब ने राजपुत्र अकबर को मारवाड़ भेजा । राजपुत्र अकबर स्वयं राजपूतों से जा मिला और उसने औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह किया । इस विद्रोह में महाराष्ट्र के मराठों से भी सहायता लेने का प्रयास हुआ । मारवाड़ का अस्तित्व बनाए रखने के लिए दुर्गादास राठौर ने मुगलों के विरुद्ध इस संघर्ष को जारी रखा ।

मराठों के साथ संघर्ष : महाराष्ट्र में शिवाजी महाराज के नेतृत्व में स्वराज्य की स्थापना हुई । स्वराज्य स्थापना के लिए उनके द्वारा किए गए इस प्रयास में उन्हें अन्य शत्रुओं के साथ मुगलों से भी संघर्ष करना पड़ा । उनकी मृत्यु के पश्चात औरंगजेब संपूर्ण दक्षिण भारत को जीतने के उद्देश्य से दक्षिण में आया परंतु मराठों ने औरंगजेब के साथ प्रखर संघर्ष किया और अपनी स्वतंत्रता की रक्षा की । इस संपूर्ण संघर्ष की जानकारी हम आगे चलकर लेंगे ।

स्वाध्याय

१. नाम बताओ :

(१) गोंडवाना की रानी –
(२) उदयसिंह का पुत्र –
(३) मुगल सत्ता का संस्थापक –
(४) बहमनी राज्य का प्रथम सुल्तान –
(५) गुरु गोविंद सिंह द्वारा स्थापित दल –

२. समूह से अलग विकल्प चुनो :

(१) सुल्तान मुहम्मद, कुतुबुद्दीन ऐबक, मुहम्मद गोरी, बाबर
(२) आदिलशाही, निजामशाही, सुल्तानशाही, बरीदशाही
(३) अकबर, हुमायूँ, शेरशाह, औरंगजेब

३. संक्षेप में उत्तर लिखो :

(१) विजयनगर और बहमनी राज्यों का उदय क्यों हुआ ?

(२) महमूद गवाँ ने कौन-से सुधार किए ?

(३) असम में अपनी सत्ता को सुदृढ़ करना मुगलों के लिए क्यों असंभव हुआ ?

४. अपने शब्दों में संक्षेप में जानकारी लिखो :

(१) कृष्णदेवराय

(२) चांदबीबी

(३) रानी दुर्गावती

५. कारण सहित लिखो :

(१) बहमनी राज्य के पाँच खंड हो गए ।

(२) राणा सांगा की सेना की पराजय हुई ।

(३) राणा प्रताप इतिहास में अमर हुए ।

(४) औरंगजेब ने गुरु तेगबहादुर को बंदी बनाया।

(५) राजपूतों ने मुगलों के विरुद्ध संघर्ष किया।

६. कालरेखा पूर्ण करो :

ई.स.१३३६	ई.स.	ई.स.१५०९	ई.स. .....
↓	↓	↓	↓
विजयनगर राज्य की स्थापना	बहमनी राज्य की स्थापना	.....	मुगल सत्ता की स्थापना

७. इंटरनेट की सहायता से किसी भी उस व्यक्ति की जानकारी प्राप्त करो; जो तुम्हें अच्छा लगता है और वह जानकारी निम्न चौखट में लिखो :

मुझे यह मालूम है

उपक्रम

पाठ में आए हुए व्यक्तियों के विषय में अधिक जानकारी संदर्भ पुस्तकों, इंटरनेट, समाचारपत्रों की सहायता से प्राप्त करो । उपक्रम कॉपी में चित्र - जानकारी का कोलाज बनाओ और इतिहास की कक्षा में उसकी प्रदर्शनी का आयोजन करो ।

देवगिरी का किला